बाबा रामदेव विशाल मेला एवं प्रतिभा सम्मान समारोह, दौसा में माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

बाबा रामदेव जी महाराज की जय।

दौसा के सिकराय में आज आराध्य लोकदेवता बाबा रामदेव जी के विशाल मेले में आकर बड़ी प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। कल झण्डा पूजन के साथ मेले की शुरुआत हुई, रात्रि भजन हुआ और आज विशाल रक्तदान शिविर यहाँ पर लगाया जा रहा है। इसके लिए मैं सिकराय के सभी लोगों और मेला समिति को साधुवाद देता हूँ।

बाबा रामदेव जी सामाजिक सद्भाव, सौहार्द और समरसता की मिसाल रहे। उनका पूरा जीवन मानव मात्र के लिए समर्पित रहा था। उन्होंने दुखियों के दुःख दूर किए।

उन्होंने कुष्ठ रोग के पीड़ितों का दुःख दूर किया और अपनी प्रजा की रक्षा की। बाबा रामदेव जी का जीवन हम सभी के लिए प्रेरणा है।

भारत में अनादि काल से कई महान विभूतियों ने जन्म लेकर समाज को जागरुक करने और हमारी सनातन संस्कृति के संवर्धन का काम किया है। इनमें बाबा रामदेव जी का नाम प्रमुख है।

बाबा रामदेव जी को हमारे पूरे प्रदेश में तो पूजा जाता ही है, इसी के साथ देश के कई हिस्सों में भी, गुजरात में भी रामदेव जी महाराज की बड़ी मान्यता है।

हमारी संस्कृति में हमारे लोक देवी - देवताओं का महत्वपूर्ण स्थान हैं। बाबा रामदेव जी, तेजाजी, गोगाजी ने मानवता को सत्य, न्याय और मर्यादा की सीख दी। इनका सम्पूर्ण जीवन जीव कल्याण के लिए समर्पित रहा।

हमारे इन लोक देवी - देवताओं ने केवल भक्ति ही नहीं की, बल्कि असमानता और सामाजिक बुराइयों के विरोध में भी आवाज उठाई।

हमारे महापुरुष और लोक देवी-देवता हमें सदा सद्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं। जब हम इनके जीवन के बारे में पढ़ते हैं तो हम देखते हैं की सच्चाई और अच्छाई के रास्ते पर चलकर मनुष्य बहुत कुछ प्राप्त कर सकता है।

सच्चाई और अच्छाई के रास्ते पर कई बाधाएं आती हैं, लेकिन उन बाधाओं से घबराए बिना जब हम न्याय के रास्ते पर आगे बढ़ते हैं, अच्छाई की तरफ आगे बढ़ते हैं; तब हमारी जीत होती है।

बाबा रामदेव जी को भगवान श्री कृष्ण का अवतार माना जाता है। बाबा रामदेव जी को पीरों का पीर कहा जाता है। उन्हें प्रजारक्षक कहा जाता है, दु:खियों का दु:खहर्ता कहा जाता है। बाबा रामदेव जी ने अपने एक जीवन में कई व्यक्तित्वों की तरह आदर्श जीवन जिया।

उन्होंने डाली बाई को अपनी धर्म की बहन बनाया और सदा अपनी बहन के लिए भाई का धर्म निभाया। बाबा रामदेव जी का जीवन और उनके विचार इतने समय बाद आज भी प्रासंगिक है। हम बाबा रामदेव जी के विचारों से सीख लेकर आगे बढ़ें, यही हमारा प्रयास होना चाहिए।

मुझे बताया गया है कि आज इस पवित्र अवसर पर यहाँ “प्रतिभा सम्मान समारोह” का आयोजन भी किया जा रहा है। मैं इसके लिए दौसा के सभी लोगों और आयोजकों को साधुवाद देता हूँ।

मेरा मानना है कि गांवों में हमारी परंपरा और संस्कृति आज भी जीवित हैं। सामूहिकता की भावना के साथ जो बड़े से बड़ा काम हमारे गांवों में हो सकता है, वो कहीं और नहीं हो सकता है। गाँव के बालक-बालिका को जब अच्छी शिक्षा मिलती है, जब अच्छी सुविधा मिलती है तो वे

पढ़ लिखकर बहुत आगे बढ़ते हैं। गांवों में जब विकास होता है तो उससे व्यक्ति का वास्तविक विकास होता है।

गाँव के बालक-बालिका पढ़ाई से लेकर खेलकूद और कुछ नया करने के मामले में शहरों के युवाओं को पीछे छोड़ देते हैं, क्योंकि गाँव से निकला बालक शिक्षा के साथ संस्कारों को साथ लेकर आगे बढ़ता है। आधुनिकता की तरफ बढ़ता है तो अपनी विरासत को साथ लेकर बढ़ता है।

गाँव के युवा अपनी जड़ों से जुड़े रहते हैं। वो जब किसी पद पर जाते हैं तो भी उन्हें अपने गाँव का ध्यान रहता है। उन्हें मालूम होता है कि वो किस स्थिति-परिस्थिति से निकलकर आगे ये हैं; इसलिए वो समाज में सबके विकास का संकल्प लेकर आगे बढ़ते हैं।

आज सबसे अधिक जरूरी है कि हम अपने बच्चों को, आने वाली पीढ़ियों को अच्छी से अच्छी शिक्षा दें। आजादी के 75 साल में जैसे जैसे हमारा देश आगे बढ़ा है, गाँव-गाँव में स्कूल खुले हैं। बालिकाओं के लिए बारहवीं तक के स्कूल खुले हैं। जैसे-जैसे टेक्नोलॉजी डिवेलप हुई है, वैसे वैसे पढ़ाई अधिक सहज हुई है।

आज ऑनलाइन एजुकेशन का दायरा बढ़ा है। देश के सुदूर गाँव में बैठा बच्चा भी आज बड़े से बड़े कोचिंग संस्थान और यूनिवर्सिटी से पढ़ाई कर पा रहा है। आज करियर के कई रास्ते बच्चों के लिए खुले हैं। खुद का बिजनेस शुरू करने पर सरकार की तरफ से सपोर्ट मिलता है। आज देश में सरकार युवाओं को आगे बढ़ाने पर पूरा ध्यान दे रही है।

बड़े – बुजुर्गों की भी जिम्मेदारी बनती है कि युवाओं को और बच्चों को सही दिशा दिखाएं। उन्हें अच्छी शिक्षा के साथ अच्छे संस्कार भी दें, जिससे कि हमारे युवा नशे, गलत संगति और गलत आदतों से दूर रहें।

हमारे लोक संस्कृति, लोक देवी-देवताओं और महापुरुषों के बारे में आज की पीढ़ी को जानकारी देने में सबसे बड़ी भूमिका गाँव के बुजुर्ग और समझदार लोग ही निभा सकते हैं।

हम आधुनिकता की और बढ़ें, लेकिन अपने संस्कारों को साथ लेकर चलें, ये शिक्षा आप ही दे सकते हैं।

मुझे विश्वास है कि यहाँ सिकराय, दौसा के सभी युवा और अनुभवी बड़े बुजुर्ग अपनी जिम्मेदारी को अच्छे से समझकर अपने गाँव, समाज और अपने आप को आगे बढ़ाने के लिए हर संभव प्रयास करते रहेंगे।

हम अपने लोक देवी – देवताओं से सीख लेंगे। समाज में समरसता और सौहार्द के लिए काम करेंगे। समाज को आधुनिक सोच के साथ आगे बढ़ाएंगे। जो कुरीतियाँ हैं, उनको दूर कर अपनी और समाज की; दोनों की प्रगति करेंगे। मैं आप सभी को बहुत बहुत शुभकामनाएं देता हूँ।

जय हो लोक देवता बाबा रामदेव जी महाराज जी की।